श्री चंद्र कवचं

श्री चंद्र कवचं

अस्य श्री चंद्र कवचस्य | गौतम ऋषिः |
अनुष्टुप् छंदः | श्री चंद्रो देवता |
चंद्र प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः | |

ध्यानं

समं चतुर्भुजं वंदे केयूर मकुटोज्वलम् |
वासुदेवस्य नयनं शंकरस्य च भूषणम् | |

एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिनः कवचं शुभम् | |

अथः चंद्र कवचम्

शशी पातु शिरोदेशं भालं पातु कलानिधिः |
चक्षुषी चंद्रमाः पातु श्रुती पातु निशापतिः | | 1 | |

प्राणं क्षपकरः पातु मुखं कुमुदबांधवः |
पातु कंठं च मे सोमः स्कंधे जैवातृकस्तथा | | 2 | |

करौ सुधाकरः पातु वक्षः पातु निशाकरः |
हृदयं पातु मे चंद्रो नाभिं शंकरभूषणः | | 3 | |

मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः |
ऊरू तारापतिः पातु मृगांको जानुनी सदा | | 4 | |

अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ विधुः सदा |
सर्वाण्यन्यानि चांगानि पातु चंद्रोखिलं वपुः | | 5 | |

फलश्रुतिः
एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति मुक्ति प्रदायकम् |
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत् | | 6 | |

इति श्री चंद्र कवचं संपूर्ण